Inaugaration of

SANCHIT ART

on 20th March 2010 at ITC Hotel " The Mughal" AGRA

News Paper :- HINDI DAINIK JAGRAN DT. 21.03.2010

देखो! कुछ कह रहे हैं खामोश रंग

- होटल मुगल के मीना बाजार में शुरू हुई आगरा की पहली आर्ट गैलरी
- देश के नामचीन चित्रकारों की कला से सजी प्रदर्शनी

आगरा, जागरण संवाददाताः कैनवास पर यूं ही छितरे रंग भले ही खामोश लगें, लेकिन उनकी अपनी अलग जुबां है। मन की कल्पना संग बहती चितेरे की तूलिका ने जो उकेरा है, उसे एक बार नजर भर देख तो लें, वही खामोश रंग आपसे साक्षात्कार करते नजर आएंगे। यकीन न हो तो होटल आईटीसी मुगल की आर्ट गैलरी का एक चक्कर लगा आएं।

होटल में हाल ही में शुरू हुए मीना बाजार में शनिवार से कला का एक मंच और सज गया। द संचित आर्ट गैलरी के नाम से शहर की कलाकार अनु जोशन ने यहां देश के जाने-माने चितेरों की कलाओं को संकलित किया है। कला प्रेमियों को चित्रकला के प्रति आकर्षित करने और कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिये शुरू की गई इस स्थायी आर्ट गैलरी का उद्घाटन मैती बर्मन, लक्ष्मा गौड़, संजय भट्टाचार्य, परेश मैती, नीरज गोस्वामी, जयश्री बर्मन, शक्ति बर्मन, अनवर खान और सीमा कोहली ने किया।

इस दौरान होटल के एक हॉल में एक दिवसीय प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें इन कलाकारों के अलावा थोटा वैंकुटम, युसुफ अरक्कल, पर्थ शॉ, पारितोष सेन, चंद्रा भट्टाचार्य, कंचनदास गुप्ता, अर्पणा कौर, शिप्रा भट्टाचार्य, सुहास रॉय, शुवा प्रसन्ना, दीपक बनर्जी, मैती डैलटेल, माया बर्मन और सतीश गुजराल की पेंटिंग भी रखी गई हैं।

मुगल होटल की आर्ट गैलरी का उद्घाटन करतीं मैत्री बर्मन। साथ हैं परेश मैत्री, संजय भट्टाचार्य, जयश्री बर्मन, शक्ति बर्मन, नीरज गोस्वामी, अनवर खान और सीमा कोहली।

जो सोचता हूं, उकेरता हूं

परेश मैती

चित्रकला को अभिव्यक्ति का मजबूत साधन मानते हैं। वह बताते हैं कि उनकी तूलिका हमेशा से ही भारतीयता, संस्कृति, कला प्रेम और जीवन की उमंग के इर्दगिर्द ही घूमी है।

परेश मैत्री।

ये रहस्य में डूबे रंग हैं

संजय भट्टाचार्य।

संजय भट्टाचार्य के कैनवास पर सभी की नजरें ठहरी हुई थीं, कुछ समझने की कोशिश कर रही थीं। एक पेंटिंग के आत्म भाव की व्याख्या करते हुये संजय ने बताया कि आशीर्वाद और रहस्य थीम पर बनी इस चित्रकला में रंगों का बहाव और कूची की बाजीगरी है।

आत्मानुभूति को कैनवास पर उतारा है

नीरज गोस्वामी व रेणुका।

राजस्थान निवासी नीरज गोस्वामी ने महज चार वर्ष की उम्र से रंगों से खेलना शुरू कर दिया था। अब वह अपने चित्रों के जरिये भावों को गहराई और सूक्ष्म अवस्था की ओर ले जाने की कोशिश करते हैं। नीरज ने बताया कि उनकी पत्नी रेणुका ने उन्हें प्रेरणा दी और अब वह रंगों के जरिये अवचेतन की यात्रा पर चल पड़े हैं।